जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

उदयपुर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 27 संख्याः 271 प्रभात उदयपुर, शनिवार 1 अगस्त, 2020 आर.जे. 7202 पृष्ठ 8 मूल्य 1.20 रु.

उत्तरी अमेरिका में समुद्र तट पर पाए जाने वाले पक्षियों में ''सॉलिटरी सैण्डपाइपर'' बहुत अनोखी चिड़िया है। अधिकांशतः सैण्डपाइपर पक्षी झुण्ड में रहते हैं और झुण्ड में ही प्रवास करते हैं पर सॉलिटरी सैण्डपाइपर पक्षी अकेले रहते हैं और अकेले ही प्रवास करते हैं। ये पक्षी कैनेडा व अलास्का के सुदूर उत्तरी क्षेत्र में प्रजनन करते हैं और सर्दियाँ मध्य व दक्षिणी अमेरिका में नदी नालों के किनारे बिताते हैं। चूंकि ये अकेले रहते हैं इसलिए अपने क्षेत्र की सुरक्षा के लिए हमेशा बेहद चौकन्ने रहते हैं। ये संभवतया उन पहली प्रजातियों में से एक हैं जो खतरे को भांप कर चेतावनी देते हैं। अन्य शोरबर्ड्स की तुलना में सॉलिटरी सैण्डपाइपर्स और इनके आवास के बारे में सबसे कम जानकारी है। सबसे पहले सन् 1813 में ऑर्निथॉलजिस्ट एलैक्ज़ैंडर विल्सन ने इनकी खोज की थी, और उसके भी 90 साल बाद 1903 में इनके आवास की जानकारी मिली। इससे पहले तक यह भी पता नहीं था कि ये कहां घर बनाती हैं। इतना ही नहीं, स्पॉटैड सैण्डपाइपर के अण्डों व चूजों को सॉलिटरी सैण्डपाइपर के अण्डे व चूजे समझ लिया जाता था। वैज्ञानिकों ने बाद में पाया कि जहां अन्य सैण्डपाइपर पक्षी जमीन पर घर बनाते हैं, वहीं सॉलिटरी सैण्डपाइपर पेड़ों पर अन्य पक्षियों द्वारा छोड़े गए घोंसलों में अपना घर बनाते हैं, खासकर सॉन्गबर्ड्स के घोंसलों में। आमतौर पर अमेरिकन रॉबिन, रस्टी ब्लैक बर्ड, ईस्टर्नकिंग बर्ड, ग्रे जे आदि द्वारा छोड़े हुए घोंसलों में सॉलिटरी सैण्डपाइपर पक्षी अण्डे देते हैं। घर की तलाश नर करता है और मादा उसे जरुरत के अनुसार तैयार करती है। ये पक्षी कभी झुण्ड में नहीं मिलते, हमेशा यहां वहां एक-दो पक्षी नज़र आते हैं, इसलिए इनकी गणना करना भी कठिन है। लेकिन कैनेडा वाइल्डलाइफ सर्विस का अनुमान है कि उत्तरी अमेरिका में इनकी संख्या 25,000 के लगभग हो सकती है।

क्या दोनों तरफ से विधायकों को पैसे देने की होड़ चल रही है?

अब तक तो केवल मु.मंत्री की ओर से आरोप लगाया जा रहा था कि भाजपा कांग्रेस के विधायकों को पैसे का लालच देकर तोड़ने का प्रयास कर रही थी

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 31 जुलाई। राजस्थान के मुख्यमंत्री और भी ज्यादा दबाव में दिख रहे हैं और कुछ लोगों का कहना है कि लगता है वे हालात पर से नियंत्रण खोते जा रहे हैं। यह भी कहा गया है कि मुख्यमंत्री उन सभी 100 विधायकों, जिन्हें उन्होंने पहले जयपुर में फिर जैसलमेर में बाड़ाबंदी में रखा, को वे खुलेआम पैसे देने की पेशकश कर रहे हैं।

गहलोत ने कहा है कि सचिन पायलट और बागी विधायकों को भाजपा उनकी सरकार गिराने के लिए करोड़ों रुपए दे रही है। इन बागी विधायकों में हेमाराम चौधरी जैसे वरिष्ठ विधायक भी शामिल हैं जो गहलोत की ही उम्र के हैं।

अब चर्चाओं के अनुसार गहलोत ने एक आश्चर्यजनक किंतु निंदनीय पेशकश की है, उन विधायकों को, जो उनके साथ हैं कि विधायकों को उनका (गहलोत) समर्थन करने से जो नुकसान हो रहा है उसकी पूरी भरपाई की जाएगी। क्या मुख्यमंत्री अपने विधायकों को खुलेआम पैसे देने की पेशकश कर रहे हैं? क्या वे यह कह रह हैं कि क्योंकि आपको सचिन के विधायकों की तरह भाजपा से पैसे नहीं मिल पा रहे हैं। इसीलिए चिंता मत कीजिए, मैं हूं उसकी भरपाई करने के लिए।

गहलोत ने अक्सर कहा है कि वे जनता को सबूत देंगे कि हेमाराम चौधरी व अन्य विधायकों को कितना पैसा दिया गया है तथा क्या अन्य फायदे दिए जा रहे हैं।

इसके साथ गहलोत ने जयपुर में 10 से 31 जुलाई तक विधायकों को सैवन स्टार होटल फेयरमॉन्ट में रखा था, जो कि रत्नाकर शर्मा का होटल है। शर्मा गहलोत के पुत्र वैभव गहलोत के पार्टनर हैं, जो अपने पिता के मुख्यमंत्रित्व काल में बड़े बिजनैस मैन बन गए हैं।

ये वहीं रत्नाकर शर्मा हैं, जिन्होंने यस बैंक से 168 करोड़ रु. का कर्ज लिया था, पर लौटाया नहीं, इससे बैंक गंभीर संकट में आ गया क्योंकि शर्मा के साथ और भी कई लोगों ने बैंक के साथ धोखाधड़ी की थी।

गहलोत को यह स्पष्ट करना पड़

(शेष पृष्ठ 7 पर)

- परन्तु अब यह चर्चा है कि मु. मंत्री की ओर से, पार्टी के लगभग सौ विधायकों को अपने पास रोकने के लिए पैसे देने की बात भी चली है।
- इन्हीं चर्चाओं के आधार पर यह भी कहा जा रहा है, कि कांग्रेस के उन विधायकों को, जो बाड़ेबन्दी में मु.मंत्री के ''आतिथ्य'' में रह रहे थे, पहले जयपुर में और फिर अब जैसलमेर में, उन्हें किसी किस्म का नुकसान नहीं होने दिया जायेगा, अन्य सुविधाओं के अलावा, पैसा, मय ब्याज के जो ऑफर भाजपा कर रही है, उसको मु.मंत्री भी मैच करेंगे।
- दूसरी ओर यह भी चर्चा है कि बसपा विधायकों के विश्वास मत पर वोट करने पर यदि किसी प्रकार की अस्थायी पाबंदी लगती है, उच्च न्यायालय से, तो मु.मंत्री को 19 असंतुष्ट विधायकों के समर्थन की नितान्त आवश्यकता होगी।
- पर, अगर असंतुष्टों का समर्थन भी नहीं मिलता है, तो उनको ''डिस्क्वालीफाइ'' करने का भी समानान्तर प्रयास चल रहा है, इसी संदर्भ में चीफ व्हिप महेश जोशी द्वारा स्पीकर की याचिका में सम्मिलित होने की अपील की गई है।

लालू यादव को ''पैरोल'' पर बिहार चुनाव में प्रचार की अनुमति मिलेगी

'महागठबंधन, में बढ़ती अनिश्चितता की स्थिति को संभलने का मौका मिलेगा इससे

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 31 जुलाई। एक तरफ जहाँ बिहार के ''महागठबंधन'' को इन खबरों से बल मिला है, कि आर.जे.डी. (राष्ट्रीय जनता दल) अध्यक्ष आगामी विधानसभा चुनावों के दौरान लालू यादव प्रचार के लिए उपलब्ध होंगे, वहीं, शुक्रवार को एन.डी.ए.कैम्प में उस समय समस्याएं और बढ़ गई, जब राम विलास पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी (एल.जे.पी.) ने चुनाव आयोग को पत्र लिखकर मांग की कि कोरोना वायरस की स्थिति को देखते हुये चुनाव आगे सरका दिए जाएं।

इसके बाद दिन में, चिराग पासवन, जो अब एल.जे.पी. के अध्यक्ष हैं, ने शराबबंदी के निर्णय की सफलता पर प्रश्न उठाते हुए नीतीश कुमार पर हमला बोला। चिराग पासवान एक वीडियो पर प्रतिक्रिया दे रहे थे, जिसमें एक पार्षद, जो कथित रुप से नशे में था, उन्हें (चिराग) तथा उनके पिता को गालियाँ देता दिखाया गया है।

जहाँ गृहमंत्री अमित शाह यह कह चुके हैं कि बिहार में एन.डी.ए.के पार्टनर मिलकर चुनाव लड़ेंगे और जिसमें मुख्यमंत्री का चेहरा होंगे नीतीश कुमार, वहीं, यह भी माना जा रहा है कि पासवान की पार्टी भाजपा नेतृत्व के अपरोक्ष समर्थन के बिना नीतीश विरोध अभियान नहीं चला सकती। भाजपा के सूत्रों का कहना है कि , हालांकि भगवा पार्टी इस स्टेज पर नीतीश कुमार की पार्टी के साथ संबंध नहीं तोड़ना चाहती है, लेकिन वो सीटों के बंटवारे के मामले में नीतीश की सौदेबाजी की ताकत कम करके खुश होगी।

यही कारण है कि पार्टी ने एन.डी.ए.के पूर्व सहयोगी दलों, जैसे एच.ए.एम.के जीतन माझी और आर.एल.एस.पी.के उपेन्द्र कुशवाह के

(शेष पृष्ठ 7 पर)

- दूसरी ओर एन.डी.ए में राजनीतिक पेचीदगियाँ बढ़ रही हैं। रामविलास पासवान की पार्टी ने चुनाव आयोग को पत्र लिख कर कोरोना वायरस की वर्तमान स्थिति में चुनाव आगे खिसकाने की मांग की है।
- नीतीश कुमार, चुनाव पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार ही चुनाव करवाना चाहते हैं क्योंकि उनका मानना है अभी कोविड की 'मिस हैण्डलिंग' व बाढ़ की दुर्दशा के खिलाफ जनता का रोष पूरी तरह भड़का नहीं है। अतःअगर चुनाव आगे खिसकाए गये तो रोष चरम स्तर पर पहुंच जाएगा, जिसका अधिकतम नुकसान मु.मंत्री को ही होगा।
- भाजपा एक तरफ तो नीतीश के नेतृत्व में चुनाव लड़ने की बात कर रही है, पर दूसरी ओर राम विलास पासवान व उनकी पार्टी को मु. मंत्री की आलोचना करने की पूरी छूट भी दे रही है। शायद भाजपा नीतीश को रक्षात्मक मुद्रा में लाकर उनकी सीटों के लिए सौदेबाजी करने की क्षमता पर अंकुश भी लगाना चाहती है।

वसुंधरा की समानान्तर टीम

जयपुर, 31 जुलाई। राजस्थान में कांग्रेस पार्टी की भारी अर्न्तकलह या सरकार की डराती अस्थिरता के कारण जहां राजनीतिक संकट गहराता जा रहा है, वहीं भारतीय जनता पार्टी में पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे की टीम सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय है। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों में वसुंधरा राजे की

(शेष पृष्ठ 7 पर)

- यह सोशल मीडिया टीम सभी जिलों में वसुंधरा राजे के पुराने वीडियो व बयानों को प्रचारित कर रही है।

पोलिटिकल टूरिज़्म

जयपुर, 31 जुलाई। राजस्थान विधानसभा में मुख्य विपक्षी पार्टी भारतीय जनता पार्टी के उपनेता राजेन्द्र राठौड़ ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के इस बयान की कड़ी आलोचना की कि विधानसभा सत्र तय होते ही विधायकों के भाव आसमान छू रहे हैं, उन्होंने इसे चुने हुए जनप्रतिनिधियों, राज्य

(शेष पृष्ठ 7 पर)

- विधायकों को पांच सितारा होटलों में पुलिस के कड़े पहरे में सैर करवाकर विद्रोह को दबाने का प्रयास हो रहा हैः राजेन्द्र राठौड़

गहलोत खेमे के विधायक पहुंचे जैसलमेर

जैसलमेर, 31 जुलाई (नि.सं.)। राजस्थान के सियासी घमासान के 22वें दिन आज शुक्रवार को दोपहर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत खेमे के विधायक तीन चार्टर विमानों से स्वर्णनगरी पहुंचे।

एयरपोर्ट से पूर्व नगरपरिषद सभापति अशोक तंवर की हनुमान ट्रैवल्स की तीन बसों एवं कारों से विधायकों को होटल सूर्यगढ़ लाया गया।

विश्वस्त सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार विधानसभा सत्र शुरू होने तक सभी विधायक जिनमें मनीषा

(शेष पृष्ठ 7 पर)

- शुक्रवार को दोपहर में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत खेमे के विधायक तीन चार्टर विमानों से स्वर्णनगरी पहुंचे।
- एयरपोर्ट से पूर्व नगरपरिषद सभापति अशोक तंवर के हनुमान ट्रैवल की तीन बसों एवं कारों से विधायकों को होटल सूर्यगढ़ लाया गया।

जयपुर से जैसलमेर शिफ्ट हुई सियासी बाड़ाबंदी, पर कुछ मंत्री-विधायक जयपुर रुके

सरकार के रणनीतिकारों को डर है कि कहीं ईद व रक्षाबंधन पर परिजनों के जरिए विधायकों में सेंध नहीं लगाई जाए। अतः परिजनों से विधायकों को दूर रखने का प्रयास हो रहा है ?

जयपुर, 31 जुलाई। राजस्थान में चल रहे सियासी संकट और सरकार बचाने की कवायद के बीच अब कांग्रेस के विधायकों को जयपुर से जैसलमेर शिफ्ट कर दिया गया है। शुक्रवार को दोपहर 3 बजे चार्टर्ड विमान के जरिए 53 विधायकों को जयपुर से जैसलमेर के लिए रवाना किया गया था। राजस्व मंत्री हरीश चौधरी के साथ शुक्रवार को कुल 48 विधायक जैसलमेर पहुंचे। इन सभी को कड़ी सुरक्षा में सिविल एयरपोर्ट से बसों व गाड़ियों से होटल सूर्यगढ़ पहुंचाया गया। इसके बाद दूसरे राउंड में शाम को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत सहित बाकी मंत्री-विधायक जैसलमेर के लिए रवाना हुए। मुख्यमंत्री की शनिवार को जयपुर वापसी हो सकती है। उसके बाद कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता रणदीप सिंह सुरजेवाला, पीसीसी अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा और अजय माकन भी जैसलमेर पहुंच गए।

कुछ मंत्री और विधायक अभी जयपुर में ही रुके हुए हैं। इनमें से मंत्री जयपुर में ही बने रह सकते हैं, लेकिन बाकी बचे विधायकों को शनिवार को जैसलमेर भेजा जाएगा। जयपुर में रुकने वाले मंत्रियों में डॉ. रघु शर्मा, प्रतापसिंह खाचरियावास, उदयलाल आंजना, लालचंद कटारिया, अशोक चांदना, सुभाष गर्ग हैं तो विधायकों में अमित

(शेष पृष्ठ 7 पर)

- जयपुर रूकने वाले मंत्रियों में डॉ. रघु शर्मा, प्रतापसिंह खाचरियावास, उदयलाल आंजना, लालचंद कटारिया, अशोक चांदना, सुभाष गर्ग, विधायक अमित चाचाण, जगदीश शर्मा, परसराम मोरदिया, बलवान पूनिया, बाबूलाल वर्मा, भंवरलाल मेघवाल शामिल हैं।
- प्राप्त जानकारी के अनुसार, अमित चाचाण और जगदीश वर्मा को शनिवार को जैसलमेर भेजा जाएगा।
- अतः इस तरह से अभी कांग्रेस और सहयोगी दलों के 87 विधायकों के जैसलमेर पहुंचने की सूचना है।

अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रम्प ने नवम्बर में होने वाले अमेरिका के चुनाव को आगे खिसकाने की पेशकश की

सन् 1788 से, जब से अमेरिका के संविधान के अनुसार चुनाव आयोजित किये जा रहे हैं, आज तक चुनाव सदा निर्धारित तिथि पर ही हुए हैं, आगे पीछे नहीं

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 31 जुलाई। अमेरिका में आज यह साफ दिखाई दे रहा है कि आर्थिक संकट एक घमंडी देश के घमंड को तोड़ने के लिए क्या-क्या कर सकता है।

लोकतंत्र का ध्वजावाहक यह देश अपनी मूलभूत राजनैतिक प्रकृति के सामने खड़े बहुत बुरे संकट का सामना कर रहा है और यह प्रहार किसी और की तरफ से नहीं, बल्कि इसके सर्वोच्च संरक्षक की तरफ से ही आ रहा है।

राष्ट्रपति ट्रम्प, मतदान-तन्त्र (वोटिंग मैकेनिज़्म) के आधार पर, 3 नवम्बर को होने वाले अमेरिका के संघीय चुनावों को आगे खिसकाने का प्रस्ताव रख रहे है। सन् 1988, जब से अमेरिका का संविधान लागू हुआ था, से लेकर अब तक अमेरिकी चुनाव की निर्धारित तिथि कभी भी इधर-उधर नहीं हुई हैं।

चुनाव को आगे खिसकाये जाने का राष्ट्रपति ट्रम्प का सुझाव, अमेरिकन अर्थव्यवस्था की ताजातरीन रिपोर्ट के जारी होने के बाद आया है, जो यह दर्शाती है कि इस साल की दूसरी तिमाही में, अमेरिका की वार्षिक अर्थव्यवस्था में 33 प्रतिशत की कमी आई है। किन्तु यह रिपोर्ट इस अर्थ में तो एक अतिश्योक्ति ही है कि वार्षिक ग्रोथ दर, तिमाही-दर-तिमाही के आंकडों के आधार पर, पूरे वर्ष की प्रोजेक्टेड कमी को दर्शाती है।

तथापि, विशेषज्ञ यह कह रहे हैं कि 1947, जब तिमाही आंकड़े तैयार किये जाने की शुरुआत हुई थी, से लेकर अब तक, यह अमेरिकन अर्थव्यवस्था की सबसे खराब स्थिति है। उनका यह भी कहना है कि 1930 की महामंदी (ग्रेट रिसैशब) के दशक में भी अमेरिकन अर्थव्यवस्था में सिर्फ 12 प्रतिशत गिरावट आई थी।

आर्थिक संकट, कोरोना महामारी से निबटने का गलत तरीका तथा कोरोना वायरस केसों में जबरदस्त बढ़ोतरी, अमेरिका में हुई रिकॉर्ड मौतें तथा जातीय एवं नस्लीय संघर्ष इन सब कारणों ने मिलकर देश को अराजकता के नजदीक पहुंचाने का काम किया है।

एक ट्वीट में ट्रम्प ने कहा है कि सारी दुनिया में 'मेल-इन' वोटिंग, जो 'एबसेन्टी' वोटिंग के विपरीत है, के अस्तित्व में आने से चुनाव अयथार्थ एवं कपटपूर्ण हो जायेंगे। ये दोनों शब्द उनकी चिंता को रेखांकित करते हैं।

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति, शिष्टाचारवश, राजनैतिक विवादों में शामिल नहीं हुआ करते हैं। लेकिन स्थिति इतनी बुरी है कि पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा को मौजूदा प्रशासन तथा राष्ट्रपति ट्रम्प की कड़ी आलोचना करनी पड़ी है।

राष्ट्रपति के सुझावों को उनकी अपनी पार्टी के नेताओं का भी समर्थन नहीं मिला है, उन्होंने भी सार्वजनिक तौर पर इनका कड़ा विरोध किया है। रिपब्लिकन पार्टी के एक वरिष्ठ नेता ने कहा है कि यह ''मजाक के रुप में भी अच्छा विचार नहीं था।'' कहने की आवश्यकता नहीं कि विपक्षी डेमोक्रेटिक पार्टी ने इसका कड़ा विरोध किया है।

''यूनिवर्सल मेल-इन' वोटिंग के

(शेष पृष्ठ 7 पर)

- ट्रम्प ने अपने सुझाव के पक्ष में कहा है, कि कोविड-19 के कारण अमेरिका की इकॉनमी तैंतीस प्रतिशत सिकुड़ गयी है। अर्थशास्त्रियों के अनुसार 1947 से, जब से हर तिमाही इकॉनमी के आंकड़े प्रकाशित होने की परंपरा चालू हुई है, अमेरिका की इकॉनमी का सबसे खराब प्रदर्शन है।
- राष्ट्रपति ट्रम्प के प्रस्ताव को उनकी पार्टी में ही समर्थन नहीं मिल रहा। उनकी ही पार्टी के एक वरिष्ठ नेता ने यहां तक कहा कि यह प्रस्ताव तो एक भद्दे मजाक से भी बुरा है।

बाड़ेबंदी में बंद विधायकों का वेतन रोकें

जयपुर, 31 जुलाई। राजनीतिक गतिरोध के बीच मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और सचिन पायलट गुट के बाड़ेबंदी में बंद विधायकों के वेतन भत्ते रोकने के लिए हाईकोर्ट में जनहित याचिका पेश की गई है। इस याचिका पर 4 अगस्त को मुख्य न्यायाधीश की बैंच सुनवाई करेगी। विवेक सिंह जादौन की ओर से दायर इस जनहित याचिका में विधानसभा स्पीकर, मुख्यमंत्री, विधानसभा सचिव और मुख्य सचिव को पक्षकार बनाया गया है।

याचिका में कहा गया कि राजनीतिक गतिरोध के कारण पायलट गुट के 19 और मुख्यमंत्री गहलोत गुट के 102 विधायक गत 12 जुलाई से

(शेष पृष्ठ 7 पर)

- हाईकोर्ट में याचिका दायर, जिसमें विधानसभा स्पीकर, मुख्यमंत्री, विधानसभा सचिव और मुख्य सचिव को पक्षकार बनाया गया है।